

भर दिया म्हरा सतगुरू ल्याय कुवा को पाणी ढाणा में



भर दिया म्हरा सतगुरू,
ल्याय कुवा को पाणी ढाणा में,
कुवा को पाणी ढाणा में।

कुवा जल गहरा घणा जी,
सहज हाथ नहीं आय,
जाके हाथ साधन नहीं जी,
प्यासा ही भल जाय,
कुवा को पाणी ढाणा में।

आठों साधन अरठ बनाया,
श्रद्धाडोली लगाय,
पाताला का नीरने जी,
खैचलियो पल माय,
कुवा को पाणी ढाणा में।

यो जल है निर्मल मोती सो,
अमृत से अधिकाय,
पीवत प्रेम शान्ति व्यापे,
जन्म-मरण मिट जाय,
कुवा को पाणी ढाणा में।

यह जल नहीं ज्ञानी के खातिर,
अज्ञानी नहीं भाय,
को मुमुक्ष पीवसी जी,
पीते ही मन हरसाय,
कुवा को पाणी ढाणा में।

प्रेम होत है लाभ से जी,
यही बड़ो का नेम,
ढाणा जल से प्रेम है जी,

समस्त भजनों के लिए

समस्त भजनों के लिए लिखित और विडियो बिना इन्टरनेट के भी अपने मोबाइल में देखने के लिए गूगल प्ले स्टोर या एप्पल एप्प स्टोर से 'भजन डायरी एप्प' जरूर इनस्टॉल करे। वेबसाइट - <https://www.bhajandiary.com>



करी कृपा गुरुदेव ने जी,
प्याउ दई भरवाय,
कमला युगों युगों से प्यासी,
अब जल पियो है अधाय,
कुवा को पाणी ढाणा में IbdI

भर दिया म्हरा सतगुरु,
ल्याय कुवा को पाणी ढाणा में,
कुवा को पाणी ढाणा में IbdI

गायक – बाबूलाल प्रजापत ।
प्रेषक – साँवरिया निवाई ।
7014827014